शिष्यों में रैदास (हरिजन), कबीर (जुलाहा), धन्ना (जाट किसान), सेना (नाई), पीपा (राजपूत), भगानन्द, सुखानन्द, आशानन्द, सुरसुरानन्द, परमानन्द, महानन्द तथा श्री आनंद थे। कबीर को अपना शिष्य बनाकर तथा एकेश्वरवाद के रंगमंच पर हिन्दू-मुसलमानों को एक साथ लाकर उन्होंने समन्वयवाद का मार्ग प्रशस्त किया।

⊙ धार्मिक सम्प्रदायों में — 1. श्री सम्प्रदाय,
2. ब्रह्म सम्प्रदाय,
3. रुद्र सम्प्रदाय,
4. सनकादि सम्प्रदाय

का उदय महत्वपूर्ण माना गया है।

⊙ मध्यकालीन संत एवं उनके द्वारा स्थापित मत :—

आचार्य	समय	भाष्य	मत
शंकर	— 700 ई०	— शारीरिक भाष्य	— अद्वैत
भास्कर	— 1100 ई०	— भास्कर भाष्य	— भेदाभेद
रामानुजाचार्य	— 1140 ई०	— श्री भाष्य	— विशिष्टाद्वैत
मध्वाचार्य	— 1238 ई०	— पूर्ण प्रज्ञ	— द्वैतवाद
निम्बार्क	— 1250 ई०	— वेदांत परिजात	— द्वैताद्वैतवाद
श्री कण्ठ	— 1270 ई०	— शैव भाष्य	— शैव विशिष्टाद्वैत
श्री पति	— 1400 ई०	— श्रीकर भाष्य	— वीर शैव विशिष्टाद्वैत
वल्लभाचार्य	— 1500 ई०	— अणु भाष्य	— शुद्धाद्वैत
विज्ञान भिक्षु	— 1600 ई०	— विज्ञानामृत	— अविभागाद्वैत
बलदेव	— 1725 ई०	— गोविंद भाष्य	— अचिन्त्य भेदाभेद

मध्यकालीन संत एवं उनका काल :—

संत	— काल ई०	संत	— काल ई०
कबीर	— 1440 - 1518.	तुलसीदास	— 1489 - 1580.
गुरुनानक	— 1469 - 1538.	मीराबाई	— 1498 - 1546.
दादूदयाल	— 1544 - 1603.	शंकरदेव	— 1449 - 1568.
रामानंद	— 15वीं शताब्दी.	नरसिंह मेहता	— 15वीं शताब्दी.
वल्लभाचार्य	— 1479 - 1531.	सन्त ज्ञानेश्वर	— 13वीं शताब्दी.
चैतन्य	— 1486 - 1533.	नामदेव	— 14वीं शताब्दी.
सूरदास	— 1483 - 1563.	तुकाराम	— 1598 - 1650.

Continue.....

मुगल काल में सूफी आन्दोलन

15वीं शताब्दी के पूर्व भारत के सूफी आन्दोलन के इतिहास में दो सिलसिलों की प्रधानता रही :— (i) चिश्ती सिलसिला
(ii) सुहरवर्दी सिलसिला ।

15वीं शताब्दी में भारत में तीन मुख्य सिलसिले प्रचलित हुए— (क) शत्तारी,
(ख) कादिरी और
(ग) नक्शबंदी सिलसिला ।

मुगलकाल आने तक प्रत्येक सूफी आंदोलन की पृथक पहचान थी, लेकिन मुरीद लोग एकाधिक सिलसिलों के शेखों के पास मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए भी जाते थे । सभा ही शेख भी, जिसे सूफी खलीफा माना जाता था, विभिन्न सिलसिलों के उत्तराधिकारी होते थे । विचारधाराओं के आधार पर मुगलकाल में तीन सूफी धाराओं की पहचान की जा सकती है । एक ओर तो वे सूफी थे, जो "वहादत-उल-वुजूद" का प्रतिपादन करते थे और शरीयत की अवहेलना करते थे । दूसरी ओर वे सूफी थे जो वजूदी विचारों का खण्डन करते थे और 'वहदत-उश-शुद्ध' के सिद्धांत का प्रतिपादन करने के साथ-साथ शरीयत का सख्ती से पालन करते थे तथा हिन्दुओं और गैर सुन्नी मुसलमानों के प्रति अपेक्षाकृत असहिष्णुता का दृष्टिकोण अपनाते थे । इन दो प्रकार के सूफियों के बीच तीसरे प्रकार के सूफी वे थे, जो शरीयत और वहदत-उल-वजूद में कोई अन्तर नहीं देखते थे और हिन्दू विचारधारा को ग्रहण करना भी शरीयत के विरुद्ध नहीं समझते थे । मुगलकाल के अधिकांश सूफी इसी मध्यम मार्ग का अनुसरण करने वाले थे ।

नक्शबंदी सिलसिला :—

नक्शबंदी सिलसिला ट्रांस ओक्सियाना में 13वीं सदी के प्रारंभ में शुरू हुआ । मुगल वंश से उसका संबंध बाबर से आरंभ हुआ । भारत में यह सिलसिला ख्वाजा बाकी बिल्लाह (मृत्यु 1603) द्वारा शुरू किया गया । उसके प्रमुख शिष्य शेख अहमद सरहिन्दी थे । शेख अहमद सरहिन्दी एक ऐसे सूफी थे जो कट्टर सुन्नी होने के साथ-साथ वहदत-उल-वुजूद के सिद्धांत, गैर सूफी मुसलमानों और हिन्दुओं के विरुद्ध थे । शेख अहमद ने इस्लाम में मौलिक सुधार करने को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया । 1619 ई० में जहाँगीर ने शेख अहमद सरहिंदी को इस आरोप पर गिरफ्तार करवा दिया

Continue.....